परिषद गीत

सभी सुखी हों सभी निरामय, हम सेवा संकल्प न भूलें।
स्वास्थ्य-साधना के हम साधक, शील, विनय व्यवहार न भूलें।

राज्य, स्वर्ग की नहीं कामना, नहीं मोक्ष की चाह हमें है।
दुःख से पीड़ित आरत, आहत, बस इनकी परवाह हमें है।
सबल राष्ट्र हो, स्वस्थ जगत हो, स्नेहामृत का सार न भूलें।
स्वास्थ्य साधना के हम साधक, शील विनय व्यवहार न भूलें।

माना व्याधि अगाध अगम है, इससे बचना नहीं सरल है,
पहला सुख निरोगी काया, पाना सब की चाह प्रबल है।
कठिन चुनौती मार्ग कंटकित, साहस, धैर्य अपार न भूलें।
स्वास्थ्य साधना के हम साधक, शील, विनय व्यवहार न भूलें।

करुणा, दया, मैत्री, शुचिता, हृदय प्यार झंकार भरा हो।
कार्य-कुशलता, ज्ञान-विशदता, पुलकित मन में नेह भरा हो।
सृजन-शक्ति, सद्भाव समन्वित, वसुधा का श्रृंगार न भूलें
स्वास्थ्य साधना के हम साधक, शील, विनय व्यवहार न भूलें।

आधि-व्याधि का घर जो यह तन, बने ईश का विग्रह सुन्दर।
भरें कल्पना भाव अनगिनत, लक्ष्य प्राप्ति का साधन सत्वर।
कीर्ति-कौमुदी की गरिमा में, सेवा, श्रम उपकार न भूलें
स्वास्थ्य-साधना के हम साधक, शील, विनय व्यवहार न भूलें।